>

Title: Discussion regarding situation arising out of faulty policy for procurement of food grains and inadequate facilities for their storage (Discussion not concluded).

MR. DEPUTY-SPEAKER: Item No. 18. Shri Sharad Yadav.

श्री शरद यादव (मधेपुरा): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इस मामले पर इस सदन में चर्चा हुई। इसमें अलग-अलग तरीके से सदस्यों ने समस्या को रखा है। मैं सोचता हूं कि इसमें अपोजिशन के मैम्बर थे और कांग्रेस पार्टी के सदस्य भी इस विषय पर बोले हैं। यह एग्रीकल्चर मिनिस्ट्री, फाइनेंस मिनिस्ट्री, शुगर कोआपरेटिव मिनिस्ट्री और काटन कारपोरेशन का मामला है।

15.00 hrs.

यानी मैं यह कहूं कि जब तक पूरी भारत सरकार का इस पर एक साथ रुख नहीं होगा, तब तक इस सवाल का समाधान नहीं हो सकता। मैंने इस बहस को शुरू कर दिया है। यहा थामस जी बैठे हैं, श्री पवन कुमार बंसल जी और जोशी जी बैठे हैं। जो इस देश का टोटल प्रोडक्शन है, जो इस साल ऐस्टीमेट किया गया है, चाहे वह व्हीट हो, राइस हो, पल्सेज हो, कोअर्स ग्रेन्स हों, यह 252 मिलियन टन्स एप्रोक्सिमेटली है। अब की बार प्रोडक्शन ऑफ व्हीट एंड राइस लगभग 190 मिलियन टन्स है, मेरे पास एग्जैक्ट आंकड़े नहीं हैं, लेकिन यह ज्यादा से ज्यादा दो-चार इधर-उधर होगा। पूरे देश भर में आज खासकर अनाज के सड़ने और बर्बाद होने का संकट है। हमारे देश में जो हमारा बफर स्टाक होगा, वह लगभग 75 मिलियन टन्स होगा और बफर स्टाक की जो जरूरत है, वह 31.9 मिलियन टन्स है। आपको मिनिमम बफर स्टाक रखने की जरूरत है। आपने ऊपरी सदन में बोला है कि लगभग 20 मिलियन टन्स अतिरिक्त अनाज होगा, सरप्लस फूडग्रेन होगा। मेरा अनुमान है कि यह 30 मिलियन टन्स होगा। आप फिर से अपना गणित ठीक कर लीजिए। आप जाकर ठीक से पूछिये तो यह ज्यादा होगा, जो आपका अनुमान है, उस अनुमान से कई गुना ज्यादा सरप्लस पैदा होगा। आपकी स्टोरेज की टोटल कैपेसिटी 19 फीसदी है। मैंने कहा कि हर वर्ष आपने शुगर, व्हीट और राइस के लिए रिजर्वेशन कर दिया है कि जूट के बैग के बगैर दूसरा कोई पोलिथीन का या अन्य कोई बैग नहीं आयेगा। यह कोई एक साल का नहीं हैं, हर वर्ष इस मामले में कहीं न कहीं चूक हो जाती है। चाहे भारत सरकार से हो, चाहे राज्य सरकार से हो, चूक होती रहती है। इसके चलते फसल के समय हिंदुस्तान के किसान की समय की बेचैनी को आप और इस सदन के अधिकांश सदस्य जानते हैं कि जब उसकी फसल कट जाती है और घर आ जाती है तो बड़ी मुश्किल से मौसम से बचाते-बचाते किसान उसे घर लाता है और अनाज को रखने का हमारे यहां हजारों वर्षों से परम्परागत स्टोरेज का बड़ा जबरदस्त इंतजाम था। गांव-गांव में चालीस वर्ष पहले बंडा होते थे, कोठियां होती थीं, यानी इनके कई तरह के नाम हरियाणा और अलग-अलग राज्यों में हैं। कई जगहों पर भूसा रखने के लिए और अनाज रखने के लिए इनके बहुत से नाम हैं। पहले कोठी होती थी, कोठा होता था। उसके कई नाम थे। जैसे फौज लड़ने आती है, जब यहां बाजार लड़ने आया तो उसने सारे, या हमारी आजादी आई, हमारे देश में धरती से और हमारे किसानों के अनुभवों से जो चीज़ें हमारे पास थीं, उसे हमने पूरी तरह से बर्बाद और तबाह कर दिया है। ऐसा तबाह किया है कि आज सरकार के सर पर है। भारत में फूड ग्रेन का बहुत संकट था। खास कर गेंहू और अनाज के लिए स्वर्गीय लाल बहादुर शास्त्री जी ने एफसीआई को बनाने के लिए 14 जून, 1965 में यह फैसला किया था। एफसीआई की, कॉटन कॉर्पोरेशन ऑफ इण्डिया की, शुगर कॉर्पोरेशन की और जूट कॉर्पोरेशन की कई तरह की दिक्कतें हो सकती हैं। ये ऐसी संस्थाए है, जिनको मजबूत किए बगैर आपने पूरे देश भर में जो किया है, वह ठीक नहीं है।

जो अनाज रखने की परंपरा है, गांव में कोई आदमी, कभी सूखे पड़ते थे, बरसात आती थी, कहीं काम नहीं मिलता था तब वह घर का अनाज ही काम आता था। कोई ज्यादा पेस्टीसाइड भी नहीं लगती थी, नीम की पत्तियां डाल कर आप अनाज को कई वर्षों तक, दो-दो, तीन-तीन वर्षों तक चलाते थे। तीन वर्ष तक रखे हुए चावल के स्वाद का तो कुछ कहना ही नहीं है। उस कोठी का जो अनाज होता था, तीन वर्ष बाद तो उस चावल का स्वाद और बढ़ जाता था। गांवों में बच्चों की शादी-ब्याह होते थे, वे कोठियां गिन कर होते थे। हमारी तरफ बंड्डा देख कर शादियां किया करते थे। ये सारी चीजें हमने खत्म कर दी हैं। अब मैं इसलिए निवेदन कर रहा हूँ क्योंकि लड़ाई का मौका नहीं है। तत्काल ऐसी परिस्थिति आई हुइ है कि अनाज सड़कों पर पड़ा हुआ है। आप हरियाणा चले जाइए, पंजाब चले जाइए, वेस्टर्न यूपी चले जाइए, मध्य प्रदेश के किसी इलाके में चले जाइए, बिहार में कहीं चले जाइए। हम लोग एफसीआई में गड़बड़ मानते हैं, खराबी तो सब में है, सड़क बनाने में भी गड़बड़ है। किस चीज़ में गड़बड़ नहीं है? मैं कहना चाहता हूँ कि एफसीआई में बहुत गड़बड़ है। कॉटन कार्पोरेशन ऑफ इण्डिया में गड़बड़ है, शुगरकेन में गड़बड़ है, जूट कार्पोरेशन है। जूट को आपने रिश्ता बनाया है जूट बैग का। जब आपने यह रिज़र्व कर दिया तो बहुत अच्छा काम किया। मतलब कि जो सामान प्रकृति से आता है, वही प्रकृति को बचाएगा, वही एंवायरमेंट को बचाएगा। यह काम अच्छा किया है। लेकिन इसमें इतने लोग लगे हुए है कि इसकी तैयारी बगैर बात बन नहीं सकती है। आपने ये सारे कार्पोरेशन बनाए और बनाने के बाद ये सक्षम नहीं हुए। फूड कार्पोरेशन ऑफ इण्डिया की कैपेसिटी क्या है? आप हमेशा योजना बनाते हैं कि आप स्टोरेज के लिए अपना गोदाम बनाओगे, वेयरहाउस बनाओगे। एफसीआई 7 साल तक अपना अनाज रखेगी। आपने स्कीम बना दी। समीक्षा कर के देखा तो वह स्कीम पूरी तरह से फेल हो गई, आपकी योजना फेल हो गई। प्रणब बाबू इस पर बोल रहे थे कि हमने सब्सिडि दी हुई है। मंत्री जी, आप पता लगा लीजिए, फिर से बैठ कर सोच लीजिए, आप लोगों ने बड़े पैमाने पर गोदाम और वेयर हाउसेज़ को बनाने का काम शुरू कर दिया है। बिहार में तो एक कदम बड़ा बढ़िया उठाया गया। जब मैं मिनिस्टर था, तब मैंने भी वहां तीन सौ लाख टन की स्टोरेज़ बढ़ने के लिए कदम उठाया था। जो वेयर हाउस बनायेगा बिहार सरकार ने अभी उसको पचास फीसदी सब्सिडी देने का काम किया है, क्योंकि वहां बड़ी मुश्किल है, बिहार में प्रोक्योरमेंट की बहुत किल्लत है, बहुत दिक्कत है, उसका कारण यह है कि वहां स्टोरेज नहीं है। उत्तर प्रदेश में भी ऐसी ही हालत है, मध्य प्रदेश में भी ऐसी ही हालत है। पंजाब और हरियाणा में भी ऐसी हालत है कि वहां तो ऐसा मुश्किल हो गया है, सर छोटूराम ने अपने जमाने में, यूनियनिस्ट गवर्नमेंट थी, उसमें सर छोटूराम ने मंडी सिस्टम इतना बढ़िया बनाया कि देश भर में अकेले कहीं खरीद हो रही है तो पंजाब और हरियाणा में होती है। लेकिन वे अब उस बोझ को नहीं ढो पा रहे हैं। अनाज का सरप्लस इतना है, जो अतिरिक्त अनाज है, उसकी आप कल्पना नहीं कर सकते हैं। यानी देश भर में जो परिस्थिति है, राजस्थान में कोटा है, गंगानगर है, कोई माननीय सांसद मुझे बता रहे थे कि कल या आज वहां जूट बैग्स पहुंचे हैं। जूट बैग्स नहीं पहुंच रहे हैं, तो इसका क्या मतलब होता है, वह इतना अनाज कहां रखा जाएगा, उस अनाज में कितनी मिट्टी मिल जाएगी, वह अनाज किस काम का बचेगा? मान लो किसान का नुकसान नहीं हुआ, तो सरकार का कितना नुकसान होगा।

मैं बताना चाहता हूं कि आप कुरूक्षेत्र चले जाइए, हरियाणा और पंजाब के किसी गांव में चले जाइए, सारा अनाज सड़कों पर पड़ा हैं, ट्रैफिक जाम है, सब जाम है, यह हालत है। सबसे बड़ी बात यह है कि ऐसा एक जगह नहीं है। प्रणब बाबू ने कहा था कि हमने सब्सिडी देकर रखी है, जो गोडाउंस बनायेंगे, उनके लिए सब्सिडी की व्यवस्था है। आपको देखना चाहिए कि वह सब्सिडी उन्हें अभी तक मिली या नहीं मिली। वर्ष 2009 में आपने सब्सिडी दी थी। वर्ष 2009 के बाद जिसने-जिसने गोडाउन बना लिए, उनको सब्सिडी मिली या नहीं मिली, आपने पच्चीस फीसदी सब्सिडी दी थी। बड़े पैमाने पर छोटे व्यापारियों ने, जिन किसानों की हैसियत है, उन्होंने बना लिये और पूरे देश में बनाये हैं। आपने उनको सब्सिडी देकर, एग्रीक्लचर डिपार्टमेंट ने नाबार्ड का नोटीफिकेशन नहीं निकाला। बड़ी अजीब बात है। अब किसान बैंक में जाता है, तो वे उससे कहते हैं कि सब्सिडी तो खत्म हो गयी, किसान वापस आ जाता है। किसी के आधे बने हुए खड़े हैं और किसी के बनना शुरू हुए और बैंक ने सब्सिडी देना बंद कर दिया। आप यह तक नहीं कर सकते कि उनके पास नोटीफिकेशन पहुंच जाए। नौ साल में उन तक आपका नोटीफिकेशन नहीं पहुंच रहा है। आपने सारे देश की परंपरागत जो स्टोरेज कैपेसिटी है, उसका सर्वनाश कर दिया, उसे खत्म कर दिया। अब यह अनाज क्यों सड़ रहा है? यह एक दिन की बात नहीं है। विजुअल मीडिया का यदि सबसे अच्छा एक हिस्सा है, तो वह यह है कि इस सड़ने वाले अनाज को जिस तरह से वे चित्रित करते हैं, तो सारा देश दुखी होता है। इस देश में लोगों के लिए अन्न का बहुत ज्यादा मतलब है, अनाज पेट से जुड़ा हुआ है, जीवन से अनाज जुड़ा हुआ है। पानी है, अनाज है, लोग खाना खाकर जरा सा भी, एक दाना भी झूठन नहीं छोड़ते हैं। खाना खाने से पहले लोग खाने को नमस्कार करते हैं, प्रणाम करते हैं। आज वह अनाज सड़ रहा है, अनाज के पहाड़ के पहाड़ लगे हुए हैं। आप देश भर में जाकर देख लीजिये, सब जगह अनाज के पहाड़ के पहाड़ खड़े हुए हैं। आपने कहा कि जीओएम बना, प्रधानमंत्री जी ने बुलाया, यह सदन चल रहा है, इस सदन में 5-7 दिन से हर तरफ से यह सवाल उठा। सुषमा जी ने यह सवाल उठाया, शैलेन्द्र कुमार जी ने उठाया, मुलायम सिंह जी ने यह सवाल उठाया। उस तरफ से सारे एम.पीज़ ने यह सवाल उठाया। मैं सलमान साहब को कहना चाहता हूँ कि 1991 से हमारे ज़माने में भी था और आपके ज़माने में भी है, हमने बाज़ार को अपना लिया है। आप नहीं रोक सकते। मैं उस बहस में नहीं जाना चाहता, लेकिन आप बताइए कि बाज़ार आज किस हालत में हैं? बाज़ार का आपने जो सपना देखा था, वह चूर-चूर हो गया। आज जो बाज़ार है, वह आपको पीछे ढकेल रहा है। आपका जीडीपी घट गया, आपका बैलैन्स ऑफ पेमेन्ट गड़बड़ा गया, एक्सपोर्ट गड़बड़ा गया। लेकिन फिर पता लगा कि एक्सपोर्ट उस चीज़ में नहीं गड़बड़ाया जो इस देश की हज़ारों वर्ष की परंपरा में दस्तकार लोग हैं। दस्तकार लोगों का जो एक्सपोर्ट है, वह गड़बड़ाया नहीं है। यहाँ तो खेती और दस्तकारी थी। दस्तकारी का मामला हमने ठीक से नहीं बढ़ाया तो इंपोर्ट और एक्सपोर्ट भी गड़बड़ा गया। वह जो बाज़ार है, उसमें कई तरह का सैन्सैक्स ऊपर नीचे होता है, तो इसकी क्या हालत है? जो रुपया है, वह इतना ठंडा हो गया कि बरफ़ हो गया है। कैसी आफ़त है? अब जो विदेशों से सबसे ज्यादा 70 फीसदी तेल आप लेते हैं, वह तेल और महंगा हो जाएगा। मैं उसके विस्तार में नहीं जाना चाहता।

हमने सुना कि रीटेल में एफडीआई नहीं आ रहा है, लेकिन आप रीटेल की एफडीआई पर टिके हुए हैं कि बाज़ार शायद इससे वापस हो जाएगा। सलमान साहब से मैं कहना चाहता हूँ कि आप यकीन के साथ मेरी बात लिख लीजिए, अपने बाज़ार, अपनी परंपराएँ, अपनी संस्कृति, जिसको हिन्दुस्तान की आज़ादी का मकसद बनाकर लोगों ने लड़ा था, वह हमारी ताकत थी, वह हमारी स्ट्रैन्थ थी, वह ताकत हमने छोड़ दी। यह देखिये कि अनाज का क्या हुआ? आप भी तो गाँव के रहने वाले हैं। क्या कभी गाँवों में हम एफसीआई के पास गए? हम कहीं अपने अनाज को रखने गए थे? यहाँ सूखा और मौसम पर हमारी ज़िन्दगी थी। कोई सरकार नहीं थी, गुलाम देश था, तब लोगों में सब तरह की सुरक्षा थी और सब तरह की चीज़ें उन्होंने बचाई। मैं आपसे फिर कहता हूँ कि हिन्दुस्तान की ताकत और हिन्दुस्तान की अच्छाई, हिन्दुस्तान की आज़ादी की लड़ाई लड़ने वालों ने जितनी पहचानी थी, उतनी यदि हमने पहचानी होती, तो दुनिया के बाज़ारों में मुकाबला ही नहीं करते, हाथ मिलाकर यह देश खड़ा हो सकता था। लेकिन हमने नहीं किया। अब आपका बाज़ार पूरी तरह से ठप्प हो गया, पूरी तरह से खत्म हो गया। लेकिन हिन्दुस्तान के किसान ने एक वर्ष से नहीं, दो वर्ष से नहीं, पाँच वर्ष से आपको जहाँ खड़ा किया है, उसको देखिये। डीज़ल के, फर्टिलाइज़र के, सब तरह के दाम बढ़ गए। श्रीकांत जेना जी बैठे हैं। ये जानते हैं कि खाद के दाम किस तरह से बढ़े और पहले तो हम खाद इस्तेमाल भी नहीं करते थे। खाद ने हमारे खेत बरबाद कर दिये और वह महंगी होती जा रही है। सारी चीज़ों की दिक्कत और तकलीफ़ के बाद भी हिन्दुस्तान के किसान ने पाँच वर्ष से आपको आपके देश की आबादी की ज़रूरत से ज्यादा अनाज पैदा करके दिया। हमारा सब चीज़ों पर ध्यान है। .यानी हम सब तरह से बाज़ार के लिए चिन्तित हैं, 24 घंटे चिन्तित हैं, लेकिन जो हमारे पास ताकत है, जिस पैर पर हम खड़े हैं, उस पैर को तो हम काटने का काम करते रहे, आज भी वह पैर कहीं न कहीं काम दे रहा है तो हम उसकी तरफ देखने को भी तैयार नहीं हैं। दो-तीन वर्ष से अनाज के भंडार के भंडार लगे हैं, 20 करोड़ टन, 22 करोड़ टन अनाज जल रहा है, सड़ रहा है। उसे हम किसी आटा मिल को देते हैं तो सस्ता देते हैं और जो एफसीआई पर पड़ता है वह 12.50 रुपये या 20 रुपये पड़ता है। म उसे एक रुपया सस्ता देते हैं और सोचते हैं कि बाज़ार इससे कंट्रोल होगा। आप यह बात समझ लीजिए कि बाजार के लिए आपके पास ताकत है, बाकी तो आपका पूरा का पूरा सपना गड़बड़ा गया है। प्रणब बाबू कह रहे हैं कि घबराइए नहीं, जीडीपी बढ़ेगी। जो आर्थिक स्थिति अभी है, वह नहीं गिरेगी। मैं उनसे कहना चाहता हूं कि वह कुछ कर लें, जो देश की आंतरिक ताकत है, उसके बिना देश खड़ा नहीं रह सकता है। हमारा पड़ोसी चीन हम से अनाज के उत्पादन में बहुत पीछे था। उसके पास जमीन भी कम थी। हिन्दुस्तान की गंगा और जमुना की जो धरती है, उसमें अर्थशूी था। अभी गंगा पर बहुत लोगों ने कहा। गंगा के ऊपर लोग श्लोक सुना रहे थे। इन श्लोकों से क्या होगा? यहां पानी की जरूरत है, पानी का सवाल है। लेकिन पानी सदन के हाथ में नहीं है। पानी कैसे बचे? नदी को कैसे बचाया जाए? ठहर जाइए! इस देश में यदि सबसे ज्यादा संग्राम किसी पर होगा, तो वह पानी पर होगा। सारी नदियों पर हर सूबे के आदमी जम गए हैं। वे सोचते हैं कि केवल उनका फायदा होना चाहिए। मैं सूबों का नाम लूंगा तो लोगों को बुरा लगेगा। हम अच्छे से सच्चाई की बहस भी सुनना नहीं चाहते हैं। एक बात याद रखना कि खरी-खरी सुनने से और विचार को अपमान की हद तक सुनने से ही मुल्क बनता है। जितने बड़े लोग हैं, उन्होंने जिंदगी में अपमान सहा, इसलिए उन विचारों को खड़ा करके हमने बुत खड़े किए हैं। वे बुत नहीं थे। हममें विचार मारने की कला है। हम बुत खड़ा कर सकते हैं, विचार को कभी खड़ा नहीं कर सकते हैं। जैसा कि मैंने कहा कि आजादी की लड़ाई के जितने विचार हैं, क्या उनमें से एक को हमने दस्तकारी या खेती के बारे में माना है। महात्मा जी या उस समय के अन्य लोग कहते थे कि गांव रिपब्लिक है। हम आर्थिक रूप से बेशक पीछे होंगे, लेकिन हमारा हर गांव रिपब्लिक था। गांव में ही सब चीजों का इंतज़ाम था। लेकिन हमने उन रिपब्लिक्स को तोड़ दिया, खत्म कर दिया। मुझे इस पर कोई एतराज़ नहीं है। लेकिन क्या हम नया निर्माण करेंगे या नहीं? क्या हम नई सोच पैदा करेंगे या नहीं?

उपाध्यक्ष महोदय, मैं आज सरकार को सचेत करने के लिए खड़ा हुआ हूं। इस देश के 50-55 करोड़ किसानों की जरूरत है, देश की जरूरत है, वह जरूरत अनाज है। लेकिन लोगों के पेट खाली हैं। पेट में भूख की आग लगी हुई है। इस भूख की आग में जल कर इंसान मर रहा है। उसकी औसत उम्र सत्तर साल है, लेकिन वह पचास साल में ही मर रहा है। अभी कर्नाटक और महाराष्ट्र के लोग सूखे के बारे में बहस कर रहे थे कि सूखा पड़ा हुआ है। सरकार दो चीज तो दे सकती है, फोडर दे सकती है, अनाज दे सकती है। आप क्यों नहीं भरपूर दे रहे हैं? आप बेशक पैसा बाद में देना, अन्य चीज बाद में देना, लेकिन आपके पास जो है, उसे क्यों नहीं देते हैं? मैं जब मंत्री था तब सात सूबों में मैंने अपनी सरकार से लड़कर कहा था कि जो अनाज विदेशों में भेजा जा रहा है या सड़ रहा है। इस अनाज को बड़े पैमाने पर बांटो। राजस्थान में आपकी सरकार थी। गहलोत साहब से पूछना कि मैंने उन्हें बुलाकर कहा था कि कोई कानून मत मानो। पांच-पांच, छः-छः बोरे अनाज के हर गांव में रख दो। यदि किसी की मौत भूख से हुई तो मैं आपको एक बोरा, एक क्विंटल अनाज नहीं दूंगा। उन्होंने बहुत अच्छा काम किया।

महोदय, मैं आपसे निवेदन करता हूं कि यह जो अतिरिक्त अनाज है, यह देश की पूंजी है। देश का पेट खाली है। गरीब दिक्कत में है। कोर्ट कहती है, पर उसकी बात

नहीं मानते। हो सकता है आपके कानून न मानने लायक हों। लोक सभा के सदस्य कहते हैं कि यह सड़ा हुआ अनाज किसी तरह से बांटो। पर, आप नहीं करते। आप नीति बनाएं।

महोदय, अनाज का एक दाना भी छः महीने में बनता है। उसमें किसान की साल भर की मेहनत लगी होती है। अगर एक दाना अनाज भी खत्म होगा तो हम लोग जब चिंता करेंगे तो बोरे की चिंता करेंगे। एक बोरे की चिंता करेंगे तो क्विंटल की चिंता करेंगे और क्विंटल की चिंता करेंगे तो लाखों टन की चिंता करेंगे। आपका लाखों टन अनाज तबाही के कगार पर है। इसमें आपका ज्यादा खर्च नहीं होने वाला। अगर खर्च भी होग तो क्या इससे बड़ी कोई अन्य चीज है? आपने स्टोरेज के सारे रास्ते पूरी तरह से जला दिए। अब स्टोरेज के मामले में आपने जो योजना बनायी हुई है, किसी तरह से उसे आगे बढ़ाइए। वह दूरगामी है। वह कल की समस्या है जिसका लम्बे समय में समाधान होगा। उसे सब्सिडी देकर आगे बढ़ाइए। अभी तत्काल उसका डायवर्सिफिकेशन आप कैसे करेंगे?

जो अतिरिक्त अनाज है, जो आपका बफर स्टॉक है, वह तो मिनिमम 31.9 मिलियन टन है। वह तो मिनिमम है और यह अतिरिक्त 75 मिलियन टन अनाज है वह कहां जाएगा? उसका क्या होगा? आपके पास गोदाम नहीं है। उसे आप प्लिंथ में रखेंगे और उस पर आप तारपोलीन लगाएंगे।

उपाध्यक्ष महोदय : शरद जी, आप और कितने मिनट बोलेंगे?

â€¦(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : मैं आपको बोलने से रोक नहीं रहा हूं। मैं केवल पूछ रहा हूं।

श्री शरद यादव : उपाध्यक्ष महोदय, मैं तो इसे बस बहस के लिए चला रहा हूं। मुझे जो दर्द है, उससे ज्यादा आपको उसके बारे में मालूम है। उन दर्दों के दौर से आप ज्यादा गुजरे हैं। लेकिन हमने आज़ादी के बाद उन दर्दों के बारे में चिंता नहीं की। हम लोग संसद के साठ वर्ष का जलसा मनाते हैं। इसे मनाना चाहिए। लेकिन, इस देश के 80 फीसदी लोगों की जो हालत है, वह क्या है?...(व्यवधान) आपके पास जो अतिरिक्त अनाज हैं, वे लाखों टन हैं। पॉलिसी बनाने के लिए इन्हें राज मिला हुआ है। हमारी उनसे यही अपील है कि अनाज को बर्बाद न होने दें। हमारा उनसे यही निवेदन है।

महोदय, हमारे पास शक्ति और सामर्थ्य नहीं है। आप तो साठ वर्ष की नीतियों पर बैठे हुए हैं। आज तत्काल कुछ करना आपके हाथ में नहीं है। अगर सरकार खड़ी हो जाएगी तो आपके हाथ में आ जाएगा। अभी जो सरप्लस अनाज है, उसके बारे में आप फैसला नहीं कर सकते। आप डायवर्सिफिकेशन का फैसला नहीं कर सकते। आप सब्सिडी देने का मामला तय नहीं कर सकते। वह वित्त मंत्री तय करेंगे। मुझे वित्त मंत्री और सरकार पर दया आती है। यह अनाज इतना है कि इसकी सब्सिडी इतनी बढ़ जाएगी कि इस सरकार का घाटा और बढ़ जाएगा। इसका मतलब बाजार पूरी तरह हलचल में है। वह बाजार एक इमारत की तरह चरमरा कर गिर जाएगी। इसलिए आपसे मेरी विनती है। मैं सरकार से भी यह कहना चाहता हूं।

महोदय, मैं जब आज बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं तो मेरे साथ बहुत लोग हैं जो बोलेंगे। पर, मैं दो दिनों से यहां इसलिए बैठा हूं कि अगर सदन का सत्र नहीं चलेगा तो फिर सरकार इसकी चिंता नहीं करेगी। सरकार को क्या-क्या चिंता करनी चाहिए, इस पर वित्त मंत्री जी ने कहा। कृषि मंत्री जी तो अभी बोल नहीं पाए हैं। खाद मंत्री जी बोलें। लेकिन, यह मामला अकेले अपने वित्त मंत्री जी, खाद मंत्री का नहीं है, कृषि मंत्रालय, और योजना आयोग इत्यादि का नहीं है। पूरी सरकार जब अपनी पूरी तबियत और पूरा मन बनाकर पुरूषार्थ करेगी तभी इस समस्या का रास्ता निकलेगा, नहीं तो इसका रास्ता निकलने वाला नहीं है। अगर रास्ता नहीं निकलेगा तो देश में जो एक चीज़ सुकून की है, उसे हम क्यों बिगाड़ रहे हैं? इस देश में पेट खाली है। लोग भूखे हैं। आप आदिवासी इलाकों में नरेगा की बात कहते हैं। नरेगा का आपको पता नहीं है कि नरेगा में काम मिला या नहीं मिला। आप एक काम ही कर लीजिए कि ट्राइबल इलाके में जाकर सर्वे करा लीजिए कि नरेगा की क्या हालत है। इस देश में तो सबसे ज्यादा ट्राइबल्स हैं।...

उपाध्यक्ष महोदय: माननीय सदस्य, अगली बार आप इस चर्चा को जारी रखिएगा।

â€¦(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : यह रिकार्ड में नहीं जायेगा।

*(Interruptions) â€¦**